[illegible] 1/5/2022 / 8/2/22

B.A. Part III (1)
Hindi Hons.
Paper - 2
सगुण भक्ति काव्य

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

रसखान — क्रमशः

यह मस्त फकीर कृष्ण की लकुटी एवं कम्बल पर तीनों लोकों का राज्य निछावर करने के लिए तैयार है —

या लकुटी अरु कामरिया पर
राज तिहूँ पुर को तजि डारौं।
आठहुँ सिद्धि नवौं निधि को
सुख नन्द की गाय चराई बिसारौं॥

रसखान में सघन तन्मयासक्ति है। रसखान का सम्पूर्ण अस्तित्व ही कृष्ण की ओर धावित है। मन, वाणी और कर्म सभी कृष्ण से मिल जाने को व्याकुल है। इनकी तन्मयासक्ति पर [illegible] ने कहा है —

"इन मुसलमान हरिजनन पै कोटिन हिन्दू वारिये।"

रसखान ने प्रेम की खेती की है। प्रेम ही उनके जीवन की पूँजी है। प्रेम को कवि ने पहले तो भगवान के समकक्ष बतलाया —

प्रेम हरि को रूप है, त्यों हरि प्रेम सरूप।
एक होइ द्वै यौं लसै ज्यौं सूरज अरु धूप।

बाद में उन्होंने प्रेम को हरि से भी ऊँचा स्थान दिया क्योंकि जिसको प्रेम का स्वाद मिल जाता है उसके मन में फिर हरि को प्राप्त करने की लालसा नहीं रह जाती —

जेहि पाए बैकुंठ अरु हरिहूँ की नहिं चाहि।
सोइ अलौकिक सुद्ध सुभ सरस सप्रेम कहाहि।

कृष्ण के प्रति रसखान की भक्ति सख्य भाव की है। दास्य भाव की भक्ति में आराध्य और आराधक के बीच बराबर एक मर्यादा की दीवार खड़ी रहती है। पर रसखान दूरी नहीं बनाये रखना चाहते। दूरी मिटाकर प्रिय के साथ एकाकार हो जाने

क्रमशः —